टीस
(Tees)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

बस राज गढ़ के बस स्टैंड पर पहुँच चुकी थी मैं अनवर के साथ बस के नीचे उतरा नीचे रिक्शे वालों की लम्बी क़तार खड़ी थी। और वह सब के सब हमारी अटैची और दूसरे सामान पर झपट रहे थे मैं परेशान था कि किसके रिक्शे पर बैठा जाये। कि यकायक ज़रा दूर पर खड़े एक रिक्शेवाले ने आगे बढ़कर अनवर के हाथ से अटैची ले ली और आइये बाबू जी कहकर चल दिया अनवर उसके पीछे चल दिया उसका रिक्शा थोड़ी दूर पर खड़ा था। उसने उस पर अटैची रखी और मेरे हाथ से ब्रिफ़केस लेकर अटैची पर रख दिया और फिर मुझसे बोला बैठिये बाबू जी अनवर पहले ही रिक्शे पर बैठ चुका था। रिक्शा चल पड़ा मैंने रिक्शे वाले से कहा कि यह तो पूछा नहीं कि जाना कहाँ है अरे बाबू साहब की हवेली के पास तो ही रहते हैं। रिक्शे वाले ने जवाब दिया हमने कहा कि अच्छा तो यह हवेलियों के ज़ेरे साय रहने वाले आप की प्रजा हैं।

मैंने रिक्शे वाले की तरफ़ ज़रा तनक़ीदी निगाहों से देखा मुझे घर का काम करने के लिये एक आदमी की ज़रूरत थी। रिक्शेवाला नौजवान था लेकिन लगता था सख़्त जफ़ाकशी ने उसे वक़्त से पहले बूढ़ा बना दिया था और उसके गालों की हड्डियाँ निकली हुई थीं और उसकी बाहर निकली हुई पसलियाँ उसकी फटी हुई क़मीस से साफ़ नज़र आ रही थीं। रिक्शा चलाने के सिलसिले में वह अपनी पूरी ताक़त सर्फ़ कर रहा था और उसके बाद भी रिक्शा बहुत धीमा चल रहा था वैसे भी अब थोड़ी चढ़ाई शुरू हो गयी थी।

मैं और अनवर देहली की एक फ़र्म के टेक्निकल सेक्शन में थे अनवर राजगढ़ का रहने वाला था उसका कई अरसे से इसरार था कि मैं छुटट्यिों में राजगढ़ चलूँ क्योंकि बक़ौल अनवर के वहाँ सुकून ही सुकून है बड़ी बड़ी पुरसुकून हवेलियाँ जिस में हैबत नाक हद तक खामोशियाँ देहली के इन्तिहाई मशगूल और शोर शराबे की ज़िन्दगी से कुछ वक़्त निकाल कर कुछ तबदीली व आराम के लिये राजगढ़ से बेहतर जगह नही हो सकती इस बार मैंने अनवर के साथ राजगढ़ जाने का प्रोग्राम बना ही लिया।

रिक्शा बाज़ार के हुदूद से निकल कर आबादी वाले मोहल्ले से गुज़र रहा था। कई जगह सड़क के किनारे मकानों के बाहर बैठे लोग शतरंज की बाज़ी जमाये नज़र आये एक जगह थोड़ी भीड़ नज़र आयी बहुत से लोग गोल दायरे में खड़े नज़र आये पता चला कि कैरम का मैच चल रहा है। मैं काफ़ी हैरत से यह सब देख रहा था आज के दौर में इतनी फ़ुरसत इन लोगों को कहाँ मिल गयी। अनवर कहने लगा यार मुजरा नही होता वरना तुम इसे नवाबों के वक़्त का लखनऊ समझ लेते।

जगह–जगह बच्चे गुल्ली डंडा और कन्चे खेलते हुये नज़र आये अनवर बताने लगे उनमें से कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता यह सब ऐसे ही दिन भर आवारा गर्दी करते रहते हैं। अगर उनको डाटूँ या समझाऊँ तो उनके माँ–बाप लड़ने आ जायेगे मुझे वाक़ई उन लड़को को देख कर गुस्सा आने लगा क्योंकि उनमें से दो लड़के अब किसी बात पर झगड़ने लगे थे और उनमें आपस में मुग़ल्लेज़ात का तबादला होने लगा था जिसकी आवाज़ शीशे की तरह मेरे कान में उतरती चली जा रही थी। मेरा जी चाहा कि मैं रिक्शे से उतर कर के दोनों लड़को को एक एक झाँपड़ रसीद कर दूँ।

मैंने अपनी ख्वाहिश का इज़हार अनवर से किया अनवर ने कहा कि तुम कितनों को झाँपड मारोगे इसके बाद उनके माँ बाप ऐसी तूफ़ान बत्तमीज़ी उठाऐंगे कि तुम सन्नाटे में आ जाओगे अपने माँ बाप की शह पाकर यह

और बत्तमीज़ होते जा रहे हैं। यार उनकी हालत पर हम सिर्फ़ मातम कर सकते हैं और कुछ भी नहीं।

रिक्शा अब एक गली में मुड गया था अनवर ने बताया कि अब उसका मोहल्ला शुरू हो गया है। और उसी वक़्त मुझे लगा कि एक बच्चे ने रिक्शे के पीछे दौड़ना शुरू कर दिया है मैंने घूमकर उसे देखा और सोचा ज़रा इसकी उम्र देखिये और शरारत पर ग़ौर कीजिये। बिला वजह रिक्शे के पीछे भाग रहा है उन लड़कों के आपस में गालयिों के तबादले से मेरा मूड तो काफ़ी हद तक ख़राब हो चुका था और अब उस बच्चे को रिक्शे के पीछे भागते देखकर मुझे गुस्सा चढ़ने लगा बहर हाल वह जैसे ही रिक्शे के पास पहुँचा मैंने ज़ोर से उसे झिड़का वह ठिटुक कर रूक गया लेकिन फिर उसने दोबारह दौड़ना शुरू कर दिया किस क़दर ढीठ है मेरा पारा चढ़ने लगा लेकिन अब की वह फिर रिक्शा के नज़दीक पहुँचा तो मेरा हाथ घूम गया। मैंने हल्के से हाथ से मारा क्योंकि रिक्शा चल रहा था तो शायद इस वजह से उसे काफी तेज़ हाथ पड़ा इस बार वह रूक गया और शायद रोया क्योंकि वह अब आस्तीनों से अपने आँसू पोंछ रहा था। मुझे थोड़ी सी हमदर्दी का एहसास हुआ कि बिला वजह उसे मार दिया लेकिन यह एहसास आते ही ख़त्म हो गया क्योंकि उसने आँसू पोछते हुये रिक्शे के पीछे फिर दौड़ लगा दी। मैंने सोचा मार का उस पर ज़रा भी असर नहीं हुआ किस क़दर बेशर्म है रिक्शे के पीछे लटकने के लिये बिल्कुल पागल हुआ जा रहा है।

हवेली आ चुकी थी और रिक्शा हवेली के एहाते में दाखिल हो गया था। हम और अनवर रिक्शे से उतर गये थे क्योंकि एहाते की चढ़ाई शुरू हो गयी थी। रिक्शा वाला भी रिक्शे से उतर कर रिक्शा खींचने की कोशिश करने लगा वह बच्चा अब पीछे से रिक्शे को धक्का मार रहा था यह तो पीछे ही पड़ गया लगता हैं। सारी बदमाशी का अकेले ही ठेका लिये हुये है। मैंने सोचा लेकिन इस बार मैंने कुछ कहना मुनासिब नहीं समझा रिक्शा ड्योढी के पास जाकर रूक गया रिक्शे वाले ने रिक्शे पर से सामान उठाकर नीचे रखा अपने मैले अंगोछे से पसीना पोंछा फिर उसने बच्चे को उठाकर गोद में ले लिया अरे यह क्या तुम्हारा बेटा है मेरे मुँह से यह अलफ़ाज़ बे एखतियार निकले।

जी हाँ बाबू जी रिक्शे वाले ने उस बच्चे को अब रिक्शे की गद्दी पर बैठा दिया अरे तुमने बताया क्यों नहीं मैं इतनी देर से उसे डाँट रहा था मैं पता नहीं क्यों बुरी तरह से सिटपिटा गया।

बाबू जी इसकी माँ तो मर चुकी है और यह हमसे बहुत हिला हुआ है जब तक हम लौट कर नही आते यह हमारी राह तका करता है और दूर से ही रिक्शे को देखकर दौड़ता है। आज तो हम इसी मोहल्ले की सवारी ले आये तो यह सवारी के पीछे ही भागने लगा।

अब मैं इस बच्चे की तरफ़ देखने लगा थोड़ी देर पहले वाला बत्तमीज़ और शरीर बच्चा अब मुझे बहुत मासूम नज़र आने लगा था। वह अपने बाप की रिक्शे की गद्दी पर बैठकर इतना खुश नज़र आ रहा था कि शायद ही कोई राजा अपनी राजगद्दी पर बैठकर इतना खुश नज़र आये मुझे अब उस बच्चे पर बेतहाशा प्यार आने लगा और साथ ही साथ अपने ऊपर सख़्त निदामत कि कितना गुनेहगार हूँ मैं कि मैंने इतने भोले भाले मासूम पर हाथ उठाया जो किसी शरारत में नहीं अपने बाप की मेहनत में पीछे दौड़ रहा था। और उस मेहनत के आगे उसने मेरी झिड़की और मार की कोई परवाह नहीं की और जब उसका बाप एहाते की चढ़ाई पर रिक्शे को खींच रहा था तो वह शरारत में नहीं बल्कि अपने बाप की मदद करने के लिये रिक्शे को धक्का लगा रहा था।

अनवर ने रिक्शे वाले को पैसे दिये और वह अब रिक्शा मोड़ करके वापस जा रहा था। मेरा दिल चाहा कि उस बच्चे को गोद में लेकर उसे सीने से लगाऊँ लेकिन मैं सिर्फ़ उस बच्चे के सर पर हल्की सी चपत ही लगा सका। जिसका जवाब उसने मुस्कुरा कर दिया था मैं भी मुस्कुराया था लेकिन मेरा दिमाग़ बिल्कुल बोझल हो गया था।

.....☆.....